चहलपहल

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित बाल पत्रिका माह सितम्बर 2025 वर्ष 6 अंक 1

अनुक्रमणिका

संपादकीय 3

कहानियां

दो सहेलियां	कन्हैया लाल	4
लौटती चिट्ठियां	प्रियंका सौरभ	6
ताकत की पहचान	डॉ. कुसुम रानी	10
जल्दबाजी का..	राजकुमार जैन	13
सब्र का फल..	डॉ. प्रदीप	22
तितलियां	पूनम पांडे	24

कविताएं

चिड़ियां बन उड़	सिद्धेश्वर	07
आंसू एक मनो...	आनन्द छंणाणी	07
पैरो का जादू	सपना जैन	08
गौरा के लिए	पद्मजा शर्मा	08
डॉक्टर आए	टीकेश्वर सिन्हा	09
अंतरिक्ष यात्रा	गौरीशंकर वैश्य	09
मुन्ना पूछे दादा	माणकचंद सुथार	12
मेरा सपना	मृदुला नरूला	12
सतरंगी गुड़िया	शालिनी शर्मा	14
देश की शान	नलिन खोईवाल	21

विविध

बच्चों का कोना	15 से 17	
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	26

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित
संपादक - संजय श्रीमाली
सितम्बर 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पृष्ठ अंकित चित्र दीक्षा चौधरी द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

शिक्षा जीवन को सार्थक बनाती है

प्यारे बच्चों

सितम्बर माह में हम शिक्षक दिवस आ रहा है। आपको पता है हम शिक्षक दिवस क्यों मनाते है। हमारे देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्मदिन होने के कारण। डॉ. राधाकृष्णन प्रख्यात प्रोफेसर एवं दार्शनिक थे। वह एक साधारण परिवार में पले-बढ़े और देश के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। उन्होंने शिक्षा के लिए काफी कार्य किया तथा श्रेष्ठ शिक्षकों में उनको याद किया जाता है। इसलिए उनके जन्मदिन को हम शिक्षक दिवस के रूप में मनाते है।

बच्चों शिक्षा ही एक मात्र ऐसा रास्ता है जिससे हम जीवन को बहुत अच्छा बना सकते हैं। हम अच्छे पदों पर आसीन हो सकते है तथा समाज को सुदृढ़ एवं विकसित कर सकते है। शिक्षा हमें विनय बनाती है, सोचने के अवसर प्रदान करती है, तथा हमारे विचारों को परिपक्व बनाती है। अगर हम शिक्षित नहीं होगें तो हम भ्रमित रहेगें।

बच्चों हम महापुरूषों एवं वैज्ञानिकों की जीवनियां पढ़ते है तो हम पाते है कि साधारण परिवारों से ही वह उठकर शिक्षा एवं सोच को विकसित कर उन्होंने देश एवं विश्व को जागृत किया। जिसके कारण हम उनके कार्यों को याद करते हुए उनसे प्रेरणा प्राप्त करते है। स्वाध्याय एवं तार्किक विशेलेषण के द्वारा आप अपने जीवन को अच्छा बना सकते हो तथा स्वच्छ समाज की परिकल्पना कर सकते हो।

शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जोकि हमारे जीवन को सार्थक बनाती है। हम आने वाली पीढ़ि को सशक्त बना सकते है।

संजय श्रीमाली

दो सहेलियाँ

कन्हैया साहू 'अमित'

जंगल में सुबह की हल्की–हल्की धूप धीरे–धीरे फैल रही थी। पेड़ हरे–भरे हो रहे थे, जैसे मुस्कुरा रहे हों। पत्तों पर ओस की छोटी–छोटी बूंदें चमक रही थीं, जैसे किसी ने उन पर चाँदी छिड़क दी हो। फूलों की खुशबू हवा में तैर रही थी, और पक्षी अपनी मीठी–मीठी आवाज़ में गीत गा रहे थे। रंग–बिरंगी तितलियाँ इधर–उधर उड़ रही थीं, और मिट्टी की भीनी–भीनी खुशबू वातावरण को और भी मनमोहक बना रही थी। इसी सुंदर और हरियाली से भरे जंगल में दो पक्की सहेलियाँ रहती थीं– खुशी नाम की प्यारी खरगोश और गिली नाम की चतुर गिलहरी। खुशी नदी के किनारे रहती थी, और गिली नदी के उस पार एक घने अमरूद के पेड़ पर। दोनों की दोस्ती इतनी गहरी थी कि वे दूर होते हुए भी हर सुबह एक–दूसरे की आवाज़ सुनकर दिन की शुरुआत करतीं। 'सुप्रभात, गिली!' खुशी ने अपनी मीठी आवाज में कहा। 'सुप्रभात, खुशी!' तुम कैसी हो ? आज क्या करोगी ? गिली ने जवाब दिया।

चित्र : धीरज कच्छावा

दोनों सहेलियाँ कभी एक–दूसरे को मजेदार कहानियाँ सुनातीं, तो कभी जंगल के अन्य जानवरों की खबरें बांटतीं। लेकिन आज कुछ खास था। गिली पेड़ की ऊँची डाल पर चढ़कर चिंतित आवाज में बोली– 'खुशी! आज तुम्हें मेरे पास आना होगा। मेरे पास तुम्हारे लिए बहुत जरूरी बात है।' खुशी थोड़ी घबरा गई। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। क्या बात है ? सब ठीक तो है ना ? कोई खतरा तो नहीं ? उसने पूछा। गिली ने कहा– 'नहीं, कोई खतरा नहीं, पर एक बड़ा

मौका है। पहले आओ, फिर सब बताऊँगी।'

खुशी बोली– मैं आना चाहती हूँ, लेकिन नदी में मगरमच्छ भी रहता है। अगर उसने मुझे देख लिया तो कच्चा चबा जाएगा। गिली ने हँसते हुए कहा– क्या डरना ? हम दोनों जंगल की सबसे चतुर और बहादुर सहेलियाँ हैं!

खुशी मुस्कुराई और बोली– ठीक है! डर को हम अपने दाँत दिखा देंगे। लेकिन पहले हमें एक अच्छी योजना बनानी होगी, नहीं तो मगरमच्छ हमें अपना शिकार बना लेगा। नदी के ठंडे पानी के नीचे एक बूढ़ा मगरमच्छ छिपा हुआ था। उसका नाम था भोंदू भाई। नाम भोंदू था, पर वह बहुत चालाक और फुर्तीला था। उसकी नजर हमेशा खुशी और गिली पर टिकी रहती थी। भोंदू भाई सोच रहा था– 'आज तो मेरा नाश्ता अपने आप मेरे सामने आ गया। खरगोश बड़ी स्वादिष्ट होती है, हड्डी कम और माँस ज्यादा! वह नदी के बीच जाकर मुँह खोलकर खड़ा हो गया।

गिली नीचे उतरकर सोचने लगी। अगर खुशी सीधे नदी पार करेगी, तो भोंदू भाई उसे पकड़ लेगा। हमें अपनी चतुराई से मगरमच्छ के आँखों में धूल झोंकनी है ताकि वह हमारा शिकार न कर पाए। फिर वह अपने पेड़ के कोटर से एक लंबी रस्सी और एक पुराना थैला लेकर आई। सबसे पहले उसने रस्सी के सिरे पर एक छोटा–सा थैले के साथ पत्थर बाँधा, ताकि फेंकने पर वह सीधे खुशी के हाथ में पहुँच जाए। फिर उसने रस्सी का दूसरा सिरा अपने पंजों से पकड़ा और खुशी की ओर फेंक दिया। खुशी ने लपककर थैला पकड़ लिया। मगरमच्छ पानी में इधर–उधर तैर रहा था, लेकिन रस्सी ऊपर से जा रही थी, इसलिए वह कुछ नहीं कर सका।

अब दोनों ने अपनी–अपनी ओर के पेड़ों की मजबूत डालों पर रस्सी बाँधनी शुरू की। गिली ने पहले अपने किनारे के पेड़ पर चढ़कर डाल के चारों ओर रस्सी लपेटी, फिर ऊँचाई पर जाकर उसे कसकर गाँठ लगा दी। खुशी ने भी दूसरी ओर डाल पकड़कर रस्सी लपेटी और मजबूत गाँठ बाँधी। कुछ ही पलों में दोनों पेड़ों के बीच एक सीधी, तनी हुई रस्सी तैयार हो गई। जैसे हवा में एक पतला पुल बन गया हो।

गिली ने खुशी की ओर देखकर इशारा किया। चलो! अब देखना, मगरमच्छ कैसे मुँह ताकता रह जाएगा। गिली बोली– खुशी, सुनो! हम इस रस्सी पर थैले में पत्थर और सूखा नारियल रखकर नदी के ऊपर सरकाऊँगी। मगरमच्छ सोच करेगा कि यही तुम हो। जैसे ही वह उस पर छलांग लगाएगा, तुम रस्सी से लटककर झूले की तरह नदी पार कर

जाना।

खुशी मुस्कुराते हुए बोली– गिली, तुम तो सच में बहुत चतुर हो! चलो, अब हम अपनी सूझबूझ से ऑपरेशन 'मगर–मूर्ख' शुरू करें! गिली ने रस्सी को पेड़ से पेड़ तक कसकर बाँध दिया, फिर थैला उसके ऊपर से सरका दिया। भोंदू मगरमच्छ ने थैला आते देखा और उसकी आँखें चमक उठीं। अहा! क्या झूलती आई है! उसने छलांग लगाई और मुँह खोलकर थैले को पकड़ लिया। धप्प!, नारियल उसके दाँतों में फँस गए, और पत्थरों ने उसके जबड़े हिला दिए। भोंदू चिल्लाया,

अरे बाप रे! ये तो खरगोश नहीं, बल्कि पत्थर और मजबूत नारियल निकले! इतना जोर से लगा दिया कि मुझे तो दिन में तारे दिखने लगे! उधर खुशी रस्सी से लटकती हुई नदी पार कर गई और सीधी गिली की बाँहों में समा गई। खुशी और गिली गले मिले।

दोनों सहेलियाँ खुशी से उछल पड़ीं। आसपास के जानवर भी खुश हुए। जंगल में तालियाँ बजने लगीं। तेंदुआ, बंदर, तोता, लोमड़ी, सभी ने उनकी चतुराई की तारीफ की। गिली मुस्कुराकर बोली, देखा! अगर हम डर गए, तो मगरमच्छ हमें खा जाएगा। पर अगर ठंडे दिमाग से सोचो, तो मगरमच्छ के दाँत इतने खट्टे हो जाएंगे। वह फिर कभी 'हड्डी कम और माँस ज्यादा' खाने की नहीं सोचेगा! खुशी हँसते हुए बोली, और हमें कौन रोक सकता है, जब दो सहेलियाँ मिल जाएँ!

पता – बलौदाबाजार, छत्तीसगढ़

लौटती चिट्ठियाँ

प्रियंका सौरभ

चित्र : यश देशमुख

अंजू ने शादी के बाद मायके चिट्ठियाँ भेजनी बंद कर दी थीं। सब कहते, 'फोन कर लो, क्या ज़रूरत है चिट्ठियों की ?' पर एक दिन पुरानी अलमारी से एक लिफाफा मिला। माँ की चिट्ठी, अधूरी और बिना भेजी गई। उसमें लिखा था, 'तू चिट्ठियाँ भेजा कर, पढ़ने से लगता है तू पास है।'

उस दिन अंजू ने फिर से चिट्ठी लिखी, माँ के लिए। जवाब आया, माँ की खुशबू से भीगी चिट्ठी। अब हर महीने चिट्ठियाँ आती–जाती हैं। कागज़ पर रिश्तों की गर्मी लौटी है।

पता – आर्यनगर, हिसार, हरियाणा

चिड़िया बन उड़ जाऊं मैं

सिद्धेश्वर

चित्र : पार्थ आचार्य

चिड़िया बन उड़ जाऊँ मैं
नभ में पंख फलाऊँ मैं।
बैठ सदा हरी डाल पर,
मीठे गीत सुनाऊँ मैं।।

बिना टिकट बिन गाड़ी ही
दूर–दूर की सैर करूँ।
खुले गगन में इधर–उधर,
नित्य पवन में पैर धरूँ।।

मीठे नित फल खाऊँ मैं,
जल से प्यास बुझाऊँ मैं।
चिड़िया बन उड़ जाऊँ मैं,
नभ में पंख फलाऊँ मैं।।

चहुं ओर ही जंगल हो,
नहीं कहीं पर दंगल हो।
आजादी की श्वास मिले,
सभी जगह ही मंगल हो।।

सब से प्रीत निभाऊँ मैं,
दोस्त रोज बनाऊँ मैं।
चिड़िया बन उड़ जाऊँ मैं,

पता – हनुमाननगर,
कंकड़बाग, पटना

आंसू एक मनोभावना

आनन्द छंगाणी

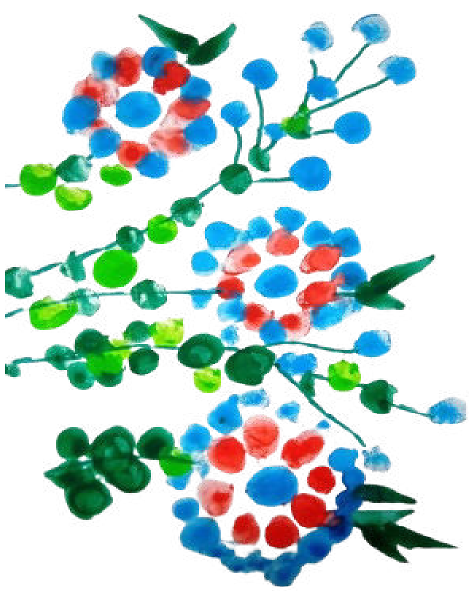

चित्र – प्रियांशु

आंसूओं
के सैलाब
जब भी आते है
भावनाओं का कुछ
कारण तो लाते ही है ?
मनोभावना का
कुछ इस कदर
अश्रुओं के माध्यम से
भाव प्रकट करना
बिना शब्दों का
संकेत है।।

पता – नत्थुसर गेट, बीकानेर

पैरों का जादू

सपना जैन

आओ साथी, खेलो साथी।
खेल रहा सर्कस में हाथी।।

करते नित अभ्यास अनाड़ी।
बनते जाते श्रेष्ठ खिलाड़ी।।

फुटबाल की है दीवानगी।
भरे तन–मन में तो ताज़गी।।

हार–जीत तय हो दो पारी।
करते गोल खेलते बारी।।

हुआ गोल पैरों का जादू।
खुशी से टीम है बेकाबू।।

जनता देखो शोर मचाती।
टीम में नया जोश जगाती।।

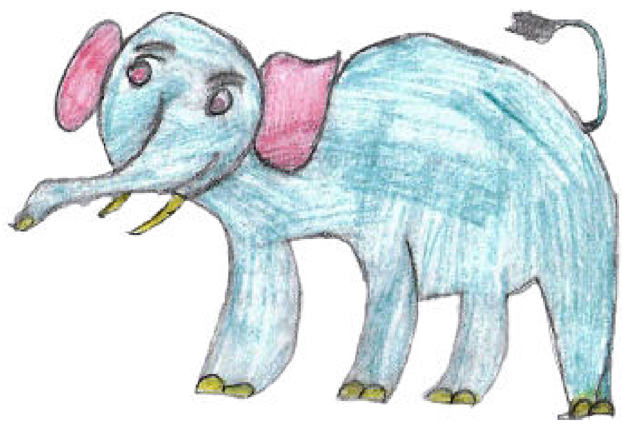

चित्र – राधिका जावा

कभी गिरते हैं कभी उठते।
लगे चोट तो हँस के सहते।।

जीत सदा से उनका सपना।
देश से प्रेम पहले अपना ।।

पता – उदयपुर, राजस्थान

चित्र – अवनि श्रीमाली

गौरा के लिए

पद्मजा शर्मा

तुम्हें जब भी देखती हूं गौरा
लगता है इस दुनिया में
सारी भावना
सारी संवेदना
सारी मुहब्बत
सारा प्यार
सारा अपनापन
सारा भोलापन
सारा सौंदर्य
सारी मासूमियत
तुम से ही है

मैं तुम्हें देखती रहूं
और तुम मुझे अपनी
मासूम निगाहों से
बस तुम्हारा हाथ
न छूट जाए मुझसे
कभी दुनिया के मेले में
जैसे छूटा था
'द लॉस्ट चाइल्ड'–1
के बच्चे का

विशेष– 1 मुल्कराज आनंद की कहानी।

पता – जोधपुर

डॉक्टर आए
टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

किट पकड़ कर डॉक्टर आए।
मुझे देख कर वे मुस्कुराए।

छुए हाथ और छुए माथा,
बुखार होने की बात बताए।

सर्दी भी है और खाँसी भी,
बड़े प्यार से मुझे समझाए।

गरम खाना और गरम पानी,
हाथ धोने का राज बताए।

हल्के से वे सुई लगा कर,
गोली खिलाए सिरप पिलाए।

मुझे रोता देख डॉक्टर अंकल,
खुद हँसे और मुझे हँसाए।
हा... हा... हा.....

पता – बालोद, छत्तीसगढ़

अंतरिक्ष-यात्रा
गौरीशंकर वैश्य विनम्र

त्र – मीना सुथा

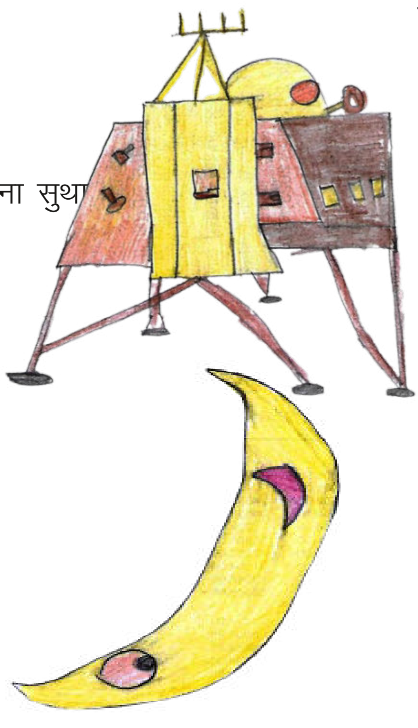

चित्र – बलदेव मारू

आओ! हम योजना बनाएँ।
अंतरिक्ष – यात्रा पर जाएँ।

चंदा मामा के घर ठहरें
धमाचौकड़ी वहीं मचाएँ।

नए – नए रहस्य जानेंगे
मस्ती से छुट्टियाँ बिताएँ।

सौरऊर्जायान क्षितिज पर
बड़े मजे से खूब उड़ाएँ।

शून्य गुरुत्वाकर्षण में हम
नए – नए करतब दिखलाएँ।

मिट्टी, पानी, खनिज धातुएँ
कई शीशियों में भर लाएँ।

वहीं से देखेंगे धरती को
हरियाली पर बलि–बलि जाएँ।

मंगल ग्रह अगला पड़ाव है
अपनी बस्ती नई बसाएँ।

गगनयान इसरो भेजेगा
यात्रियों में नाम लिखाएँ।

**पता – 117 आदिलनगर,
विकासनगर, लखनऊ**

ताकत की पहचान

डॉ. कुसुम रानी नैथानी

मई का महीना समाप्ति पर था। गर्मी अपने चरम पर थी। दोपहर का सूरज आसमान से आग बरसा रहा था और धरती तप रही थी। गाँववासी अपने–अपने घरों में दुबके हुए थे। पशु भी छायादार पेड़ों के नीचे सुस्ताने लगे थे। तभी अचानक तेज़ हवा चलने लगी और फिर वह एक आंधी में बदल गई। हवा इतनी तेज़ थी कि मिट्टी, रेत, तिनके, और सूखे पत्ते सब उड़ने लगे। खेतों के किनारे पड़ा एक तिनका तेज हवा से सहम उठा। जैसे ही हवा का झोंका उसे ऊपर उठा ले गया उसने पास उड़ रही रेत से कहा– देखो मुझे भी उड़ने की ताकत मिल गई। रेत ने थोड़ा इतराते हुए कहा– ये ताकत तुम्हारी नहीं हवा की है। मैं तो वैसे भी उड़ने में माहिर हूँ। देखो मैं कैसे ऊँचे आसमान तक जा रही हूँ। मिट्टी भी इस चर्चा में कूद पड़ी– तुम दोनों को क्या लगता है कि बस तुम ही स्मार्ट हो। जब मैं उड़ती हूँ तो इंसानों को सबसे ज़्यादा दिक्कत होती है। उनकी आँखों में पड़कर मैं उन्हें परेशान कर देती हूँ और उनके घरों में जाकर अपनी मौजूदगी का एहसास कराती हूँ।

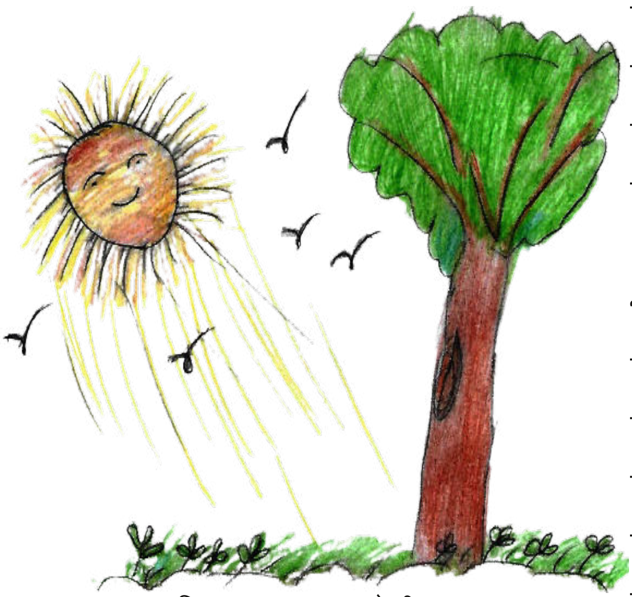

चित्र – जयन्त जोशी

तभी एक सूखा पत्ता भी हवा के संग उड़ता हुआ आया और चहककर बोला– वाह! क्या बात है ? जब तक मैं पेड़ पर था तब तक किसी ने मेरी परवाह नहीं की। अब देखो हवा मुझे कितना ऊँचा उड़ा रही है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं भी कुछ हूं। गाँववासी आंधी से बचने के लिए इधर–उधर भाग रहे थे। दुकानदार जल्दी–जल्दी अपने सामान समेट रहे थे।

किसान अपने खेतों से घर की ओर दौड़ रहे थे। बच्चे घरों के दरवाजे कसकर बंद कर रहे थे। नन्हा मोनू खिड़की से बाहर झाँक रहा था। उसने देखा कैसे मिट्टी, रेत, तिनके और पत्ते हवा में उठते–गिरते अपनी शक्ति का प्रदर्शन कर रहे थे। आंधी के दौरान टूटी एक पतंग भी उड़ती हुई आई और बोली– क्या तुम्हें पता है कि हम सबको उड़ाने वाली हवा खुद बहुत शक्तिशाली है। तिनका चिढ़कर बोला– हम जानते हैं कि हवा हमें उड़ाती है, लेकिन हम भी कुछ कम नहीं हैं।

पतंग हँसते हुए बोली– तुमने कभी सोचा है कि यह हवा अचानक इतनी तेज़ कैसे हो गई ? यह सुनकर वे एक–दूसरे की ओर देखने लगे। मिट्टी बोली– गर्मी के दिनों में ऐसा अक्सर हो जाता है और अचानक हवा की रफ्तार तेज़ हो जाती है। पतंग ने उन्हें समझाते हुए कहा– दरअसल इस सबके पीछे सूरज की गर्मी ही जिम्मेदार है। जब धूप से धरती बहुत ज्यादा तप जाती है तो हवा भी गर्म हो जाती है और ऊपर उठने लगती है। उसकी जगह लेने तुरंत ठंडी हवा आती है। इस वजह से हवा की गति बढ़ जाती है। जब यही हवा तेज़ होकर चलती है तो आंधी आ जाती है।

इसका मतलब हम हवा की वजह से उड़ रहे हैं और हवा की रफ्तार सूरज की गर्मी की वजह से तेज़ हुई है। सूरज हमेशा से धरती पर जीवन का आधार रहा है। हम सब उसकी ऊर्जा से ही चलते हैं। कुछ देर बाद हवा की गति धीमी होने लगी। मिट्टी धीरे–धीरे नीचे गिरने लगी, रेत फिर से ज़मीन पर बैठने लगी। तिनके और पत्ते भी इधर–उधर बिखर गए। आंधी अब शांत हो रही थी। गाँववासी घर से बाहर आ गए और बच्चे के साथ मोनू फिर से गलियों में खेलने के लिए दौड़ पड़ा। तिनके ने रेत की ओर देखा और मुस्कुराते हुए कहा– इस बार हम सबने अपनी ताकत देख ली। तुम ठीक कह रहे हो। यह देखकर हमारी समझ में आ गया कि असली ताकत तो हवा की होती है। पतंग ऊपर आसमान में धीरे–धीरे लहराते हुए बोली– ताकत तो सबमें होती है बस उसे पहचानना ज़रूरी है। हम कुछ भी कर लें लेकिन हवा का मुकाबला कभी नहीं कर सकते। सूखा पत्ता बोला। आंधी के साथ कुछ देर हवा में घूमकर वे फिर अपनी जगह आ गए थे। टूटी पतंग भी लहराते हुए एक पेड़ पर अटक गई।

पता – 318–ए ओंकार रोड, यु.के.

मुन्ना- पूछे दादा से

माणक चन्द सुथार

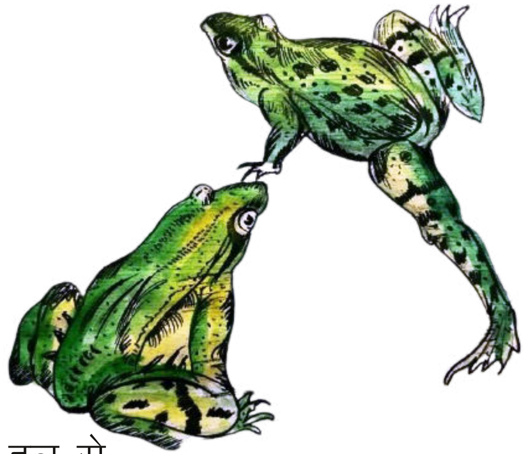
चित्र – राम भादाणी

टर्र टर्र मेढ़क क्यों बोले...?
मुन्ना पूछे दादा से,
बादल क्यों काले काले...?
मुन्ना पूछे दादा से।

बारिश की बूंदों में नहाकर
मेढ़क, नृत्ये संग गीत गाये,
पानी से जब जो हो तरबतर
रंग बादल का काला हो जाये।

बारिश में क्यों हल चलाये...?
मुन्ना पूछे दादा से,
खेतों में अन्न कैसे उपजे...?
मुन्ना पूछे दादा से।

बीजों की बुवाई होती हल से
जब धरा बारिश से तरहो जाये,
बीज, पौध से बाली बन संवरे
खेतों में अन्ने उपजे, भर जाये।

चंचल चपल मुन्ना
छत पर बारिश में नहाये,
छतरी नीचे खड़े दादाजी
देख–देख हर्षाये मुस्कराये।

पता – सी–179, मुरलीधर व्यास कॉलोनी, बीकानेर

मेरा सपना

मृदुला नरूला

चित्र – निशान्त

काश कि मैं चिड़िया होती
पेड़ों पर,उड़ती फिरती !
अनंत आसमान की करतीं सैर !
आसमानी दोस्तों से
मिलकर उन्हें रिझा ती
घर पे बुलाती, मस्ती करती !
अनगिनत दोस्त होते मेरे.
आसमान में उड़ते पक्षी–झुंडों में
मैं भी मैं भी होती.
गॉव गॉव और शहर शहर

मेरा होता आना–जाना
मेरे पंखों को छूती,
हवा हर मौसम की!
तब तो आनंद ही आनंद होता,
इस यायावरी में !
काश कि मैं चिड़िया होती!!

पता – जी6 मस्जिद मोठ ग्रेटर कैलाश, नई दिल्ली

जल्दबाजी का परिणाम

राजकुमार जैन राजन

चंपक वन में रहने वाले रोमी हिरण व मोनू बंदर दोनों पडौसी थे। दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते थे। रोमी हर काम को जल्दबाजी में करता था, जबकि मोनू किसी भी काम को सोच–समझकर करता था। जहाँ रोमी में समझ व धैर्य की कमी थी वहीं मोनू बड़ा ही होशियार व धैर्यवान था।

चित्र – महेन्द्र रंगा

एक दिन मोनू बंदर कहीं जा रहा था कि रास्ते में रोमी हिरण मिल गया। उससे रोमी ने पूछा, दोस्त ! कहाँ जा रहे हो ?

अरे भाई, भोजन की तलाश में निकला हूँ। बच्चों को भी भूख लगी है। मोनू बोला। रोमी ने कहा, चलो मैं भी चलता हूँ। साथ–साथ बड़ा मजा आएगा। चलते–चलते दोनों दोस्त एक सपेरे भोलू के मकान पर पहुंच गए। भोलू भी कहीं गया हुआ था। दोनों सावधानी से मकान के अंदर पहुंचे। वहाँ कोने में एक पिटारी पड़ी हुई थी। रोमी उसे खोलने को हुआ तो मोनू ने कहा, नहीं भाई नहीं! इसे मत खोलो। इसमें खाने की कोई चीज होती तो कुछ न कुछ गन्ध अवश्य आती।

पर रोमी की आदत तो उतावली करने की थी। आदत से लाचार वह बोला, इसमें पैकिंग की हुई मिठाई भी तो हो सकती है। शायद इसी कारण सुगंध नहीं आ रही है। मोनू चारों तरफ निरीक्षण करते हुए बोला, मुझे तो यहां खतरा दिखाई दे रहा है। देखो, सावधानी रखना जरूरी है नहीं तो हम

किसी भी खतरे में फंस जाएंगे।

तुम बड़े डरपोक हो दोस्त! ऐसे तो तुम और तुम्हारे बच्चे भूखे ही रह जाएंगे। रोमी कहने लगा, बड़ी मुश्किल से तो यह पिटारी दिखाई दी है। मैं इसे यों ही छोड़ने वाला नहीं हूं। ऐसा कहते–कहते रोमी उस पिटारी को खोलने लगा। मोनू ने देखा कि रोमी मानने वाला नहीं है तो उसने वहाँ से निकल जाने में ही अपनी भलाई समझी।

वास्तव में उस पिटारी में दो जहरीले साँप थे। पिटारी को जैसे ही खोला, फुफकारते हुए दोनों साँपों ने जगह–जगह से रोमी को डस लिया। और जहर के असर के कारण वह बेहोश हो गया। इधर मोनू बंदर जंगल के अध्यापक बंटी जिराफ़ के घर मे घुस गया। कल ही तो उसने अपने बेटे का जन्म दिन मनाया था। घर के सभी लोग आराम कर रहे थे। अचानक जिराफ़ की आंख खुल गई। उसने मोनू का स्वागत किया, उसे ढेर सारी मिठाई खिलाई और बच्चों के लिए भी दी। मोनू खुश हो अपने घर चला आया।

कुछ देर बाद वह अपने दोस्त रोमी हिरन का हाल जानने निकला। रोमी को सपेरे भालू ने जंगल के डॉक्टर गैंडामल के अस्पताल में भर्ती करवाया दिया था। यह तो अच्छा हुआ कि जहर रोमी के पूरे शरीर में फैलता उससे पहले ही सपेरा भालू घर पहुंच गया था और उसकी जान बचा ली गई।

दोनों दोस्तों ने बराबर मेहनत की मगर एक की जान खतरे में पड़ गई, तो दूसरे को मिठाई मिली। एक को उतावली करने की सजा मिली और दूसरे को धैर्य के साथ काम करने का मीठा फल! बच्चों, कभी किसी काम मे जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

पता– चित्रा प्रकाशन, आकोला, चित्तौड़गढ़

सतरंगी गुड़िया

शालिनी शर्मा

कभी सतरंगी चाल दिखती।
कभी प्रेम के जाल दिखाती।।
है बड़ी मस्तानी ये अपने,
प्रेम से सबको रिझाती।।
कोमल तोतली बोली से,
सबका मन बहलाती।
अपने बालपन की अदाओं से
सबको घायल कर जाती।।
सूनें मन को भी पागल कर जाती।।
नन्हे, नन्हे कदमों से सबका मन बहलाती।
गुलजार करती पूरे घर को
तभी तो बगिया की कली कहलाती।।
अपनी सांसों की खुशबू से
घर आंगन महकती।।
मेरी लाडली मेरे दिल की
धड़कन बन जाती।

पता – देवभूमि उत्तराखंड

बच्चों का कोना

नव्वया

कनुप्रिया

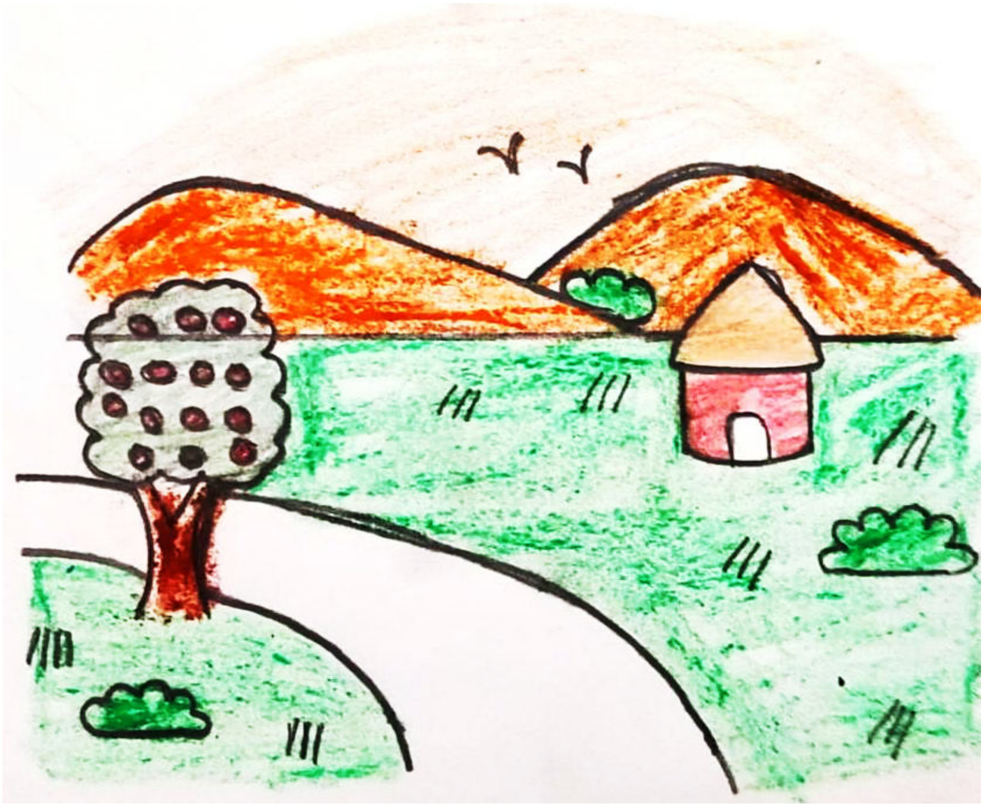

चेतना

नीमित

अनुष्का

दिक्षा चौधरी

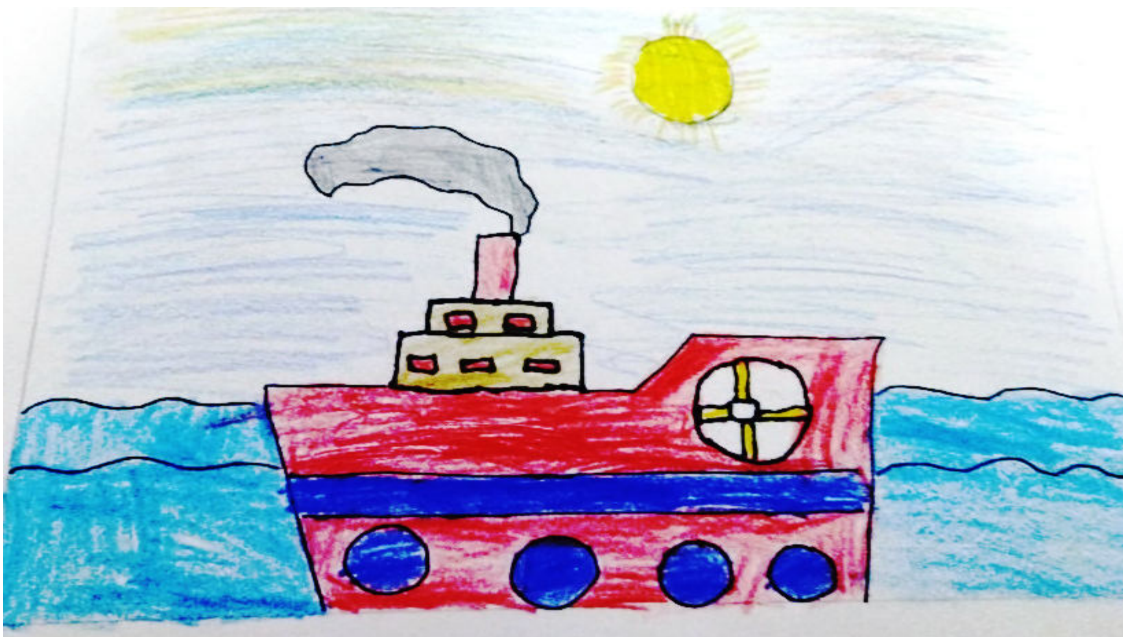

राहुल

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

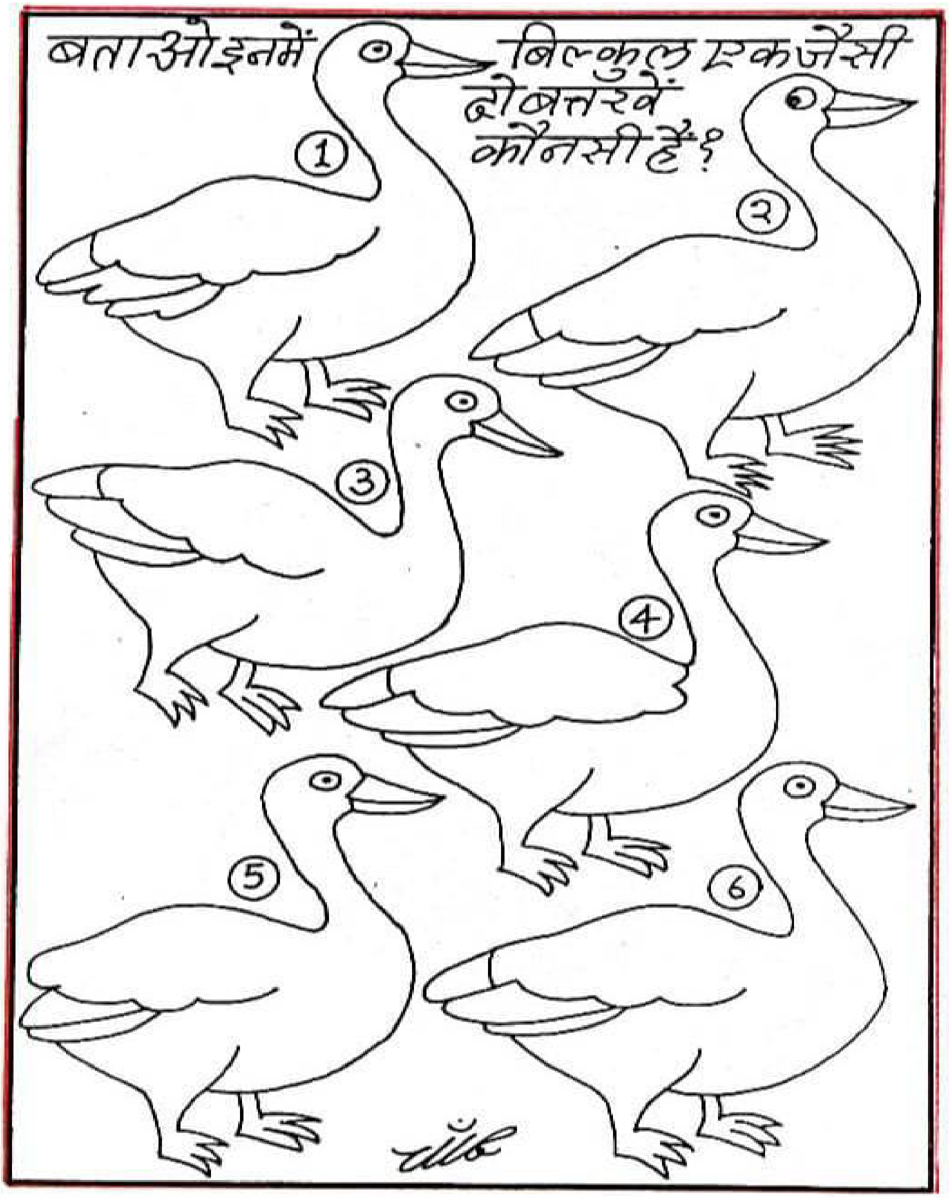

उत्तर :- न. 3 एवं न. 6 बतखें एक जैसी है। **पता – नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी**

दुनिया के देश

नॉर्वे

संजय पुरोहित

हैलो दोस्तों ! कैसे हैं आप ? इन दिनों मानसून की बरसात का खूब एन्जॉय कर रहे होंगे। यही वह समय होता है जब प्रकृति अपने पूरी खूबसूरती के साथ इंसान को आनन्दित करती है। और यही समय होता है जब हम भी धरती माता के प्रति अपने दायित्व को पूरा करें। आप सोच रहे होंगे कैसे ? तो वो ऐसे कि आप भी कम से कम एक पौधा अवश्य लगावें। उसको रेग्युलरली पानी देवें। उसकी देखभाल करें। थोड़े ही दिनों में जब आपका लगाया पौधा बढ़ना शुरू होगा तो आपको उससे प्यार हो जायेगा। प्रकृति हमें इतना कुछ देती है, तो इतना सा तो हम कर ही सकते हैं। हैं ना ?

साभार – www.countries-areas

तो चलिये अब चलते हैं आज एक अनूठे देश की सैर को। यह देश है नॉर्वे। नॉर्वे अपनी नेचुरल ब्यूटी, हिस्ट्री, कल्चर और लाईफ स्टाईल के लिये प्रसिद्ध है। नार्वे यूरोपीय महाद्वीप के उत्तर में स्थित एक देश है। यह देश 'स्कैंडिनेवियाई प्रायद्वीप' का एक भाग है। नॉर्वे का अधिकांश हिस्सा उत्तरी ध्रुव के पास स्थित है और इसकी सीमाएं समुद्र, पर्वतों और जंगलों से घिरी हुई हैं। नॉर्वे की सीमाएं ईस्ट में स्वीडन से, नॉर्थ ईस्ट में फिनलैण्ड से और थोड़ी सीमा रूस से भी मिलती है। इसके अलावा नॉर्वे की वेस्ट और नॉर्थ सीमाएं 'अटलांटिक–सी' और 'नॉर्वेजियन सागर' से मिलती है। नॉर्वे का इतिहास वाईकिंगों से जुड़ा हुआ

है। आप में से कई दोस्तों ने 'वाईकिंग' मूवी तो जरूर देखी होगी। 8वीं सेंचुरी से 11वीं सेंचूरी तक नॉर्वे के लोग समुद्र यात्रा करने वाले वाइकिंग थे। नॉर्वे ने 1814 में डेनमार्क से स्वतंत्रता प्राप्त की। फिर स्वीडन के साथ एक संघ ा बना लिया। इसके बाद 1905 में स्वीडन से भी स्वतंत्रता प्राप्त कर ली।

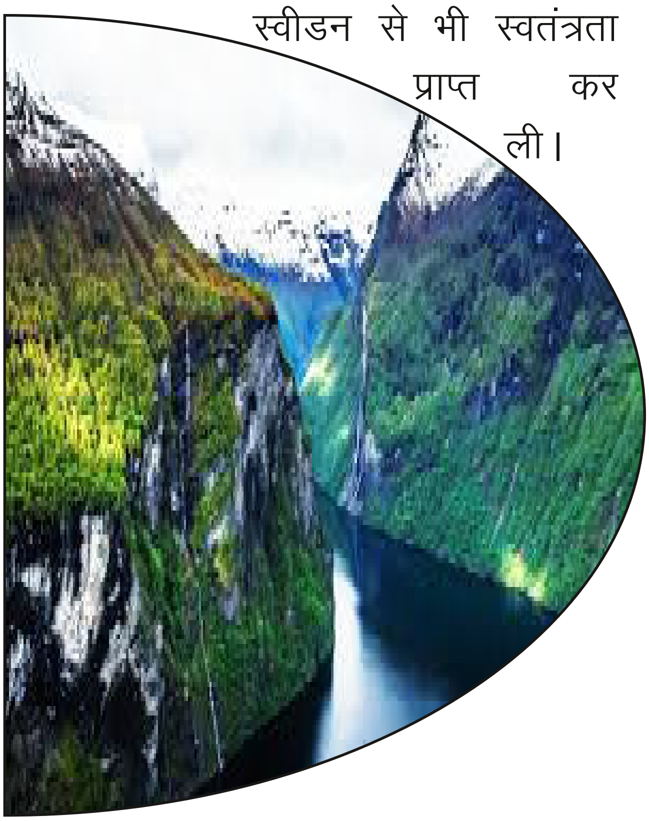

साभार – www.europ-data.com

जब सेकेण्ड वर्ल्ड वॉर हुआ तो 1940 में नाजी जर्मनी ने नॉर्वे पर आक्रमण किया और पांच सालों तक नॉर्वे जर्मनी के कब्जे में रहा। युद्ध के बाद नॉर्वे ने अपनी स्वतंत्रता को वापिस प्राप्त कर लिया। नॉर्वे की करंसी का नाम है नॉर्वेजियन क्रोन। नॉर्वे की स्थानीय भाषा में इसे क्रूने कहा जाता है जिसका अर्थ होता है मुकुट। नॉर्वे की भाषा का नाम भी नॉर्वेजियन ही है। नॉर्वे में संवैधानिक राजशाही है। किंग हैराल्ड वर्तमान में नॉर्वे के राजा हैं। यहां प्रधानमंत्री लोकतांत्रिक तरीके से चुना जाता है। नॉर्वे की संसद को स्ट्रॉटिंग कहते हैं। नार्वे एक धर्म निरपेक्ष यानी सेक्युलर देश है। यहां सभी नागरिकों को अपने अपने धर्मों को मानने की स्वतंत्रता है। फिर भी अधिकांश नागरिक ईसाई धर्म को मानते हैं। इनके अलावा इस्लाम, हिंदु और बौद्ध धर्म को मानने वाले भी रहते हैं। नॉर्वे का राष्ट्रीय पक्षी व्हाईट थ्रॉटेड डिपर है और राष्ट्रीय पशु एक बड़ा और शक्तिशाली हिरण जैसा जानवर एल्क है। फोरिकोल नॉर्वे की नेशनल डिश है। नॉर्वे एक बहुत ही खूबसूरत देश है। इसकी खूबसूरती विशेष रूप से फ्जोर्ड समुद्र की खाड़ी है जिसे यूनेस्को ने विश्व धरोहर के रूप में मान्यता दी है। इसके अलावा पहाड़, बर्फीले इलाके आकर्षित करते हैं। नॉर्वे का द्वीप 'लॉफोटेन आईलैण्ड्स' अपनी अद्‌भुत नेचुरल ब्यूटी के और मछुआरों के गांवों के लिये प्रसिद्ध है। यहां 'आर्कटिक लाईट' और 'नॉर्दन लाईट का दृश्य भी देखा जा सकता है।

नॉर्वे की राजधानी ओस्लो है। यह एक आधुनिक और सांस्कृतिक केन्द्र है। यहां की नेशनल गैलेरी, वाइकिंग शिप म्यूजियम और आर्किपेलागो प्रसिद्ध

है। एडवेंचर के शौकीनों के लिये 'किरूस्तल' आकर्षण का केन्द्र है, जहां एक विशाल पत्थर चट्टान के बीच फंसा हुआ है। नॉर्वे की इकॉनोमी की बात करें तो मुख्य रूप से तेल, गैस और खनिज उद्योगों पर निर्भर है। नॉर्वे दुनिया के सबसे बडे तेल उत्पादक देशों में से एक है। नॉर्वे विश्व के सबसे अमीर देशों में शामिल है। नॉर्वे का अधिकांश हिस्सा पहाड़ी होने के कारण एग्रीकल्चर सीमित है। फिर भी कुछ क्षेत्रों में गेहूं, आलू, मक्का का उत्पादन होता है। नॉर्वे का वन्य जीवन बहुत विविधता वाला है। यहां आर्टटिक भालू, स्नो हिट्स, भेड़िये पाये जाते हैं। इनके अलावा पक्षियों की कई प्रजातियां भी पायी जाती हैं जिनमें 'ईगल्स' और 'स्पैरो' शामिल है। नदियों और झीलों में सैल्मन मछली का बहुत महत्व है क्योंकि यह नॉर्वे के प्रमुख निर्यात उत्पादों मे से एक है। नॉर्वे की नदियां जैसे कि 'ग्लोमा रिवर' और 'टॉरनेलावा रिवर' प्रसिद्ध है। नॉर्वे में 'मिडनाईट सन' यानी 'मध्य रात्रि का सूरज' और 'पोलर लाईट' जैसे अद्वितीय प्राकृतिक दृश्य देखे जा सकते हैं। तो दोस्तों हम उम्मीद करते हैं कि आपको नॉर्वे जैसे सुंदर देश के बारे में ये जानकारी अवश्य ही पसंद आई होगी। आपको चहल पहल का यह जानकारी वाला लेख कैसा लगता है अपने कमेंट्स जरूर हमें भेजिये। अगले अंक में चलेंगे किसी और देश की सैर को तब तक के लिये... बाय बाय।

पता – समीप सूरसागर, बीकानेर।

देश की शान, हिन्दी मेरी जान

नलिन खोईवाल

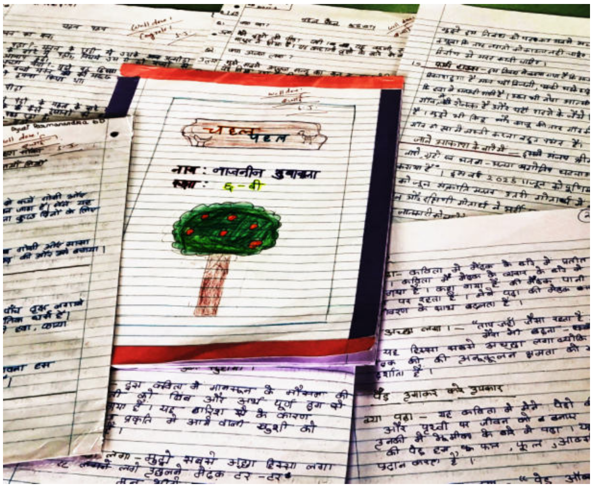

हिन्दी है मातृभाषा हमारी बताएंगे।
हिन्दी में काम सारा ही करके दिखाएंगे।।
सब यात्रा करेंगे वो शायर है या कवि।
हिन्दी की रेलगाड़ी को आगे बढ़ाएंगे।।
आनंद सबको आएगा खुश होंगे सारे लोग।
हिन्दी में नज्म और भी कविता सुनाएंगे।।
जीवन हमारा धन्य किया राजभाषा ने।
हिन्दी हमारी जान है सबको बताएंगे।।
हम को गजल मिली है विरासत में हम इसे।
हिन्दी के अक्षरों से गजल को सजाएंगे।।
आजाद अपना देश ये हिन्दोस्तान है।
हिन्दी का नाम लेके तिरंगा उठाएंगे।।
ऐलान कर दो और प्रण लो 'नलिन' तुम।
हिन्दी की शान ऊँची से ऊँची बढाएंगें।।

पता – 376–ए, सुदामा नगर, इंदौर

सब्र का फल मीठा

डॉ. प्रदीप कुमार मुखर्जी

सलिल में धैर्य बिल्कुल भी नहीं था। वह कुछ करने लगता तो शीघ्र ही उसका धैर्य जवाब दे जाता। ऐसे में वह उस काम को छोड़कर कोई दूसरा काम करने लगता। सलिल के पिता ने उसे कई बार समझाया कि 'बेटा, धीरज रखा करो। किसी भी काम का तुरंत फल नहीं मिलता। हमें सब्र से काम लेना होता है।' लेकिन सलिल पर किसी भी बात का कोई असर नहीं होता। परेशान होकर सलिल के पिता ने अपने पिता यानी सलिल के दादाजी से बात की। सुनकर सलिल के दादाजी बोले, ठीक है, सलिल को मेरे पास भेजना। मैं उसे समझा दूंगा। सलिल दादाजी के पास पहुंचा। दादाजी ने उसे बड़े प्यार से अपने पास बिठया।

चित्र – राम भादानी

फिर बोले, सलिल, कोने में रखी उस थैली में कुछ आम की गुठलियां हैं। ज़रा उस थैली को लेकर तो आना।

दादाजी ने थैली में से कुछ गुठलियां निकालकर सलिल को दीं। फिर बोले, 'सलिल, इन्हें बगीचे में जाकर ज़मीन मे बोदो।' दादा के कहे अनुसार सलिल गुठलियों को ज़मीन में बोकर लौट आया। दादाजी बोले, सलिल, तुम एक घंटे बाद मेरे पास आना।

एक घंटा बीतने पर सलिल दादाजी के पास आया तो दादाजी बोले, सलिल, ज़रा बगीचे में जाकर देखना कि बोई गई गुठलियों ने हमें फल दिया कि नहीं! सलिल ने बगीचे में जाकर देखा। लौटकर दादाजी से बोला, नहीं दादाजी,

अभी तो कुछ भी नहीं हुआ। दादाजी बोले, कोई बात नहीं सलिल। तुम जाकर अपनी पढ़ाई करो। दो घंटे बाद मेरे पास दोबारा आना। दो घंटे बाद सलिल दादाजी के पास आया तो दादाजी ने उसे फिर से बगीचे में जाकर देखने के लिए कहा। सलिल बगीचे से मुंह लटकाए हुए लौटा। बोलै, दादाजी, फल तो दूर। अभी तो गुठलियों से पौधे भी नहीं निकले। सुनकर गंभीर हो गए दादाजी। फिर बोले, ठीक है , थोड़ा और इंतज़ार करते हैं सलिल। तुम शाम को मेर पास आना। शाम को दादाजी ने फिर सलिल को वही आदेश दिया। सलिल इस बार कुछ झुंझलाते हुए लौटा। बोला, दादाजी, मुझे पता था कि इस बार भी कुछ नहीं होगा। सुनकर दादाजी बोले, सलिल, तुम इस बारे में कैसे जानते थे ? सलिल बोला, दादाजी, सीधी सी बात है कि बीज बोने के बाद पौधा निकलने और फिर उस पर फल लगने में समय लगता है। पौधा निकलने पर उसकी देखभाल करनी पड़ती है। उसे खाद–पानी देना होता है। तभी जाकर पौधे पर फल लगते हैं। सुनकर दादाजी मुस्कुरा दिए। बोले, सलिल, मैं तुम्हें यही तो समझाना चाहता था कि तुरत–फुरत कोई काम नहीं होता। हर काम समय से ही होता है, इसलिए हमें धीरज रखना चाहिए। सही समय आने पर हमारा काम ज़रूर हो जाएगा, अतः हमें सब्र से काम लेना चाहिए। सलिल की मानो अचानक आंखें खुल गईं। दादाजी ने उसे कैसे अच्छी तरह से समझा दिया था कि काम में हड़बड़ी करने से कोई फायदा नहीं क्योंकि काम को पूरा होने में समय लगता है। हमें सब्र से काम लेना चाहिए। तभी तो कहते हैं कि सब्र का फल मीठा होता है।

चित्र – दिव्यांशी शर्मा

पता – 15, पटपड़गंज, दिल्ली

तितलियाँ

पूनम पांडे

अथर्व की छुट्टियां चल रहीं थीं। इसलिए वह अपनी बुआ के घर आया हुआ था। बुआ के घर पर एक छोटा सा बगीचा था। उसमें आम, अमरूद, जामुन, अनार, नींबू, तुलसी, कनेर, गुलाब, गुड़हल के पेड़ थे। सातवीं कक्षा में पढ़ने वाला अथर्व उस बगीचे में जाकर अपना होमवर्क किया करता था। उसका घर एक अपार्टमेंट में था। वहां बालकनी में कुछ गमले लगे थे। इसलिए यह हरा भरा सुंदर बगीचा उसका मन मोह लेता था। बुआ की अपने कामों में इक व्यस्त दिनचर्या रहती थी। मगर अथर्व की तो बगीचे में अलग ही सुबह, दोपहर, शाम हुआ करती थी।

चित्र – अमन जावा

उसके पास अब एक ही दिन का अवकाश और बचा था। इसलिए हरे–भरे बगीचे में कुछ गुनगुनाता हुआ अथर्व सुबह से ही वहां बैठा था। इस बीच उसने हिन्दी की कविता तथा सामाजिक विज्ञान का सबक भी दोहरा लिया था। उसको इतनी गंभीरतापूर्वक पढाई करता देखकर दो गिलहरी उसे धौल–धप्पा देकर वापस आम के पेड़ पर चढ़ गयी थी। किट, किट के सुर अथर्व का मन भी संगीतमय कर रहे थे कि अचानक तितलियों का झुंड लहराता हुआ आया। सुनहरी, भूरी, पीली, चटख बैंगनी, सफेद, चितकबरी और भी जाने कितनी सारी तितलियां कहीं से उड़ती हुई आईं और गुलाब के नरम फूलों पर मंडराने लगी। कभी–कभार लगता था कि वह उन गुलाबों से गपशप कर रही हैं। 'काश! मैं इनकी भाषा समझ पाता ?' अथर्व मन ही मन सोचने लगा। इस समय तो यह प्यारा सा वातावरण अथर्व को इतना मनमोहक लग रहा था कि उसका मन बल्लियों उछल रहा था। आज उसे इतना आनंद आ रहा था जितना पिछले जन्मदिन पर खिलौना रोबोट मिलने पर भी नहीं आया था। इन तितलियों की अठखेलियाँ देख देखकर उसका चेहरा खुशी से दमक रहा था। कौतुहलवश वह चुपचाप उनके पीछे–पीछे

टहलने लगा। मगर तितलियां तो उससे अनजान अपनी ही मौज मस्ती में खोई हुई थीं। शायद वह भांप गई थी कि अथर्व से कोई खतरा नहीं है। तभी कुछ कुत्ते बाहर सड़क पर जोर से भौकने लगे। शायद, अपने शिकार बिल्ली पर उनकी नजर पड़ गई थी। यह रंग में भंग हो गया।

कोमल दिल की नन्ही सी तितलियाँ भौकने की आवाज से घबरा गई। उनके मंडराने की निरंतरता को टोक लग गई। और किसी अनजाने खतरे से डरकर वह अलग–अलग बिखर गई। एकाध तो कहीं छिप भी गई। यह देखकर अथर्व के सीने में जैसे कोई कांच सा चुभा। ओह, तो, इसका मतलब अब यह तितलियाँ घबराकर चली जायेंगी। सोचकर अचानक अथर्व का दिल टूटने सा लगा।

कितना लुभावना मौसम था। अभी वह सारी तितलियों के रंग तक ठीक से, मन भरकर देख भी न पाया था। उसका मन हुआ कि पत्थर मारकर इन आवारा कुत्तों को कहीं दूर खदेड़ कर आ जाये। मगर उसकी शिक्षिका ने किसी भी जीव–जंतु को डराने, मारने, सताने के लिए मना किया था। अथर्व का दिल धड़कने लगा। तितलियों की भाषा का एक भी शब्द उसे आता तो वह पूरी कोशिश करता। और उनको समझा देता। आप बेफिक्र रहो। यह जमीन पर चलने वाले श्वान आपका बाल भी बांका नहीं कर सकते। आप तो नीले अंबर की परी हो। बादलों की मित्र। आप पर तो आंच भी नहीं आयेगी। मगर वह मन में ही कह पाया था। काश कि यह तितलियाँ उसके मन की भाषा पढ़ना जानती ? वह आंखें मूंदकर प्रार्थना कर ही रहा था कि एक छोटा सा दूधिया रंग का बिल्ली का बच्चा वहां आ गया। छोटी सी कत्थई आंखें थी उसकी। लग रहा था कि दर्जी ने दो गोल बटन टांक रखे हों। वह शायद उन कुत्तों से बचता–बचाता, छिपता–छिपाता आ गया था। उसकी मियूं,,, मियूं, मीं मीं की आवाज से अथर्व का दिल पिघल गया। उसने गोद में लिया और उसे पुचकारते हुए कोई कविता गाने लगा। बिल्ली का बच्चा गरदन इस तरह हिला रहा था मानो सब सुन रहा है और समझ भी। अथर्व एक पल के लिए तितलियों को भूल ही गया था। तभी गिलहरी की आवाज आई। अथर्व ने गरदन ऊपर उठाकर इधर–उधर देखा। तितलियों का पूरा झुंड वहीं था। गिलहरियों के साथ उनके निराले ही खेल हो रहे थे। अथर्व का उमसता हुआ दिल एक बार फिर खुशी की फुहार में भीगने लगा।

वह भीतर जाकर कटोरे में दूध ले आया। गिलहरियों के लिए बिस्कुट के चूरे ले आया। गिलहरियों की भी दावत हो गई थी। दूध पीकर वह नन्हा सा बिल्ली का बच्चा अब अथर्व की गोद में सो रहा था। तितलियाँ अभी तक वहीं थीं। अब तो अथर्व मन भरकर देख रहा था। सुनहरी, गुलाबी, पीली, चटख बैंगनी, सफेद, चितकबरी और भी जाने कितनी सारी तितलियां ही तितलियाँ।

पता– पुष्कर रोड, कोटरा, अजमेर

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

बच्चों इस माह दो महत्त्वपूर्ण खगोलिय घटनाएं होगी। यह है चन्द्र ग्रहण एवं सूर्य ग्रहण। हम इन ग्रहणों को चाहे देख न पाए लेकिन हमें ग्रहण क्या होता है इसके बारे में पता होना चाहिए।

जब पृथ्वी सूर्य और चंद्रमा के बीच आ जाती है, जिससे पृथ्वी की छाया चंद्रमा पर पड़ती है और चंद्रमा धुंधला या लाल दिखाई देने लगता है। यह घटना पूर्णिमा की रात को होती है और ऐसा तब होता है जब सूर्य, पृथ्वी और चंद्रमा एक सीधी रेखा में होते हैं।

साभार www.hindustantimes.com

इसी प्रकार सूर्य ग्रहण जब चंद्रमा सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाता है और सूर्य के प्रकाश को पृथ्वी तक पहुँचने से अवरुद्ध कर देता है, जिससे पृथ्वी पर चंद्रमा की छाया पड़ती है। यह घटना केवल अमावस्या के दौरान होती है, जब सूर्य, चंद्रमा और पृथ्वी एक सीध में आते है। इस माह 7 सितंबर को पूर्ण चंद्र ग्रहण होगा। पूर्ण चंद्र ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा पूरी तरह से पृथ्वी की अंधेरी छाया या उपछाया से होकर गुजरता है। इस प्रकार के ग्रहण के दौरान, चंद्रमा धीरे–धीरे गहरा होता जाएगा और फिर जंग जैसा या रक्त लाल रंग का हो जाएगा। ग्रहण पूरे एशिया और ऑस्ट्रेलिया तथा यूरोप और अफ्रीका के मध्य और पूर्वी हिस्सों में दिखाई देगा। (नासा मानचित्र और ग्रहण सूचना)

इसी प्रकार 21 सितम्बर को आंशिक सूर्य ग्रहण होगा। आंशिक सूर्य ग्रहण तब होता है जब चंद्रमा सूर्य के केवल एक हिस्से को कवर करता है, कभी–कभी कुकी से निकाले गए टुकड़े जैसा दिखता है। आंशिक सूर्य ग्रहण को केवल एक विशेष सौर फिल्टर के साथ या सूर्य के प्रतिबिंब को देखकर ही

सुरक्षित रूप से देखा जा सकता है। यह आंशिक ग्रहण केवल न्यूजीलैंड, अंटार्कटिका और दक्षिणी प्रशांत महासागर में दिखाई देगा। इसे 76ः कवरेज के साथ न्यूज़ीलैंड से सबसे अच्छी तरह देखा जाएगा। (नासा मानचित्र और ग्रहण सूचना)

अंतरिक्ष में शनि ग्रह अपने आप अनूठा ग्रह है। इसके वयल होने के कारण यह बहुत ही आकर्षक दिखाई देता है। इस माह 21 सितंबर शनि विपक्ष में।

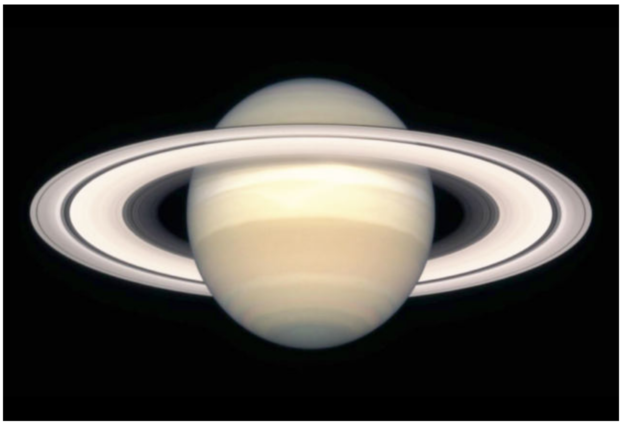

साभार www.livescience.com

चक्राकार ग्रह पृथ्वी के सबसे निकट होगा और इसका चेहरा सूर्य द्वारा पूरी तरह से प्रकाशित होगा। यह वर्ष के किसी भी अन्य समय की तुलना में अधिक चमकीला होगा और पूरी रात दिखाई देगा। शनि और उसके चंद्रमाओं को देखने और उनकी तस्वीरें लेने का यह सबसे अच्छा समय है। एक मध्यम आकार या बड़ी दूरबीन आपको शनि के छल्ले और उसके कुछ सबसे चमकीले चंद्रमाओं को देखने की अनुमति देगी।

इसी क्रम में 22 सितंबर को ''सितंबर विषुव'' है। सितंबर विषुव 18:17 यूटीसी पर होता है। सूर्य भूमध्य रेखा पर सीधा चमकेगा और पूरे विश्व में दिन और रात लगभग बराबर होंगे। यह उत्तरी गोलार्ध में पतझड़ का पहला दिन (शरद ऋतु विषुव) और दक्षिणी गोलार्ध में वसंत का पहला दिन (वसंत विषुव) भी है।

दिनांक 23 सितंबर को विपक्ष में नेपच्यून को देखा जाता सकता है। नीला विशाल ग्रह पृथ्वी के सबसे करीब होगा और इसका चेहरा सूर्य से पूरी तरह

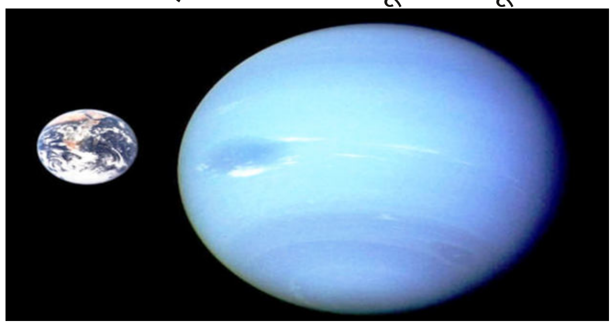

साभार www.edgeofspace.in

प्रकाशित होगा। यह वर्ष के किसी भी अन्य समय की तुलना में अधिक चमकीला होगा और पूरी रात दिखाई देगा। नेप्च्यून को देखने और उसकी तस्वीर लेने का यह सबसे अच्छा समय है। पृथ्वी से इसकी अत्यधिक दूरी के कारण, यह सबसे शक्तिशाली दूरबीनों को छोड़कर सभी में केवल एक छोटे नीले बिंदु के रूप में दिखाई देगा।

om

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते है। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - दोपहर: 12:00 से सायं 7:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन
आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486
अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com